विद्याभवन , बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय

रूपम कुमारी ,वर्ग-सप्तम्, विषय-हिन्दी

दिनांक- ६/७/२०.

।।अध्ययन- -सामग्री ।।.

सुप्रभात बच्चों,

आज हम स्नेह कहानी के शेषांश को पढ़कर समाप्त करेंगे तथा कल से इस पाठ के प्रश्नाभ्यास को पूरा करेंगे ।.

।। स्नेह ।।. इसी बीच एक दिन उमा ने देखा , शशि नहीं आया । उसे दुख हुआ । सोचा ,शायद उसे बुखार चढ़ा होगा । पर ,कई दिन बीत गए ,शशि को उसने देखा नहीं । वह अब पुराने घर नहीं जा सकती थी क्योंकि निरुपमा उसके अलग होने से बहुत

क्रुद्ध थी ।उसका हृदय घबरा उठा , शशि सचमुच बीमार है ।लेकिन वह क्या करे ?उसने अमूल्य से कहा ,"तुम जरा उसघर जाकर देखो तो शशि कैसा है?

अमूल्य ने इतना ही कहा ,"मैं वहाँ नहीं जा सकता ।".

उमा क्या करे ? मन मारकर उसने दो दिन और बता दिए । पर तीसरे दिन उससे रहा नहीं गया ।उसने निरुपमा की दासी को बुलाकर पूछा, "शशि कैसा है श्यामा ?".

श्यामा की आँखें सजल हो उठा ।उसने कहा "वह तुम्हारी जेठानी ने जबसे जाना है कि शशि तुम्हारे पास आता है तो उन्होंने उसका स्कूल जाना बंद करवा दिया है ।"उसे खूब

मारती है । बेचारा बालक शायद जी न सकेगी । उमा काँप उठी ," सच कहती हो श्यामा । " श्यामा बोली ," -सदा से मैं उनके साथ हूँ ,वह नहीं चाहती कि कोई और शशि से प्रेम करे ।".

"अच्छा चलो श्यामा ।मैं तुम्हारे साथ चलकर जीजी से पुछूँगी कि प्रेम पर क्या किसी का अधिकार होता है ?"

श्यामा बोली, "न नहीं उमा ।". उमा ने अशोक को गोदी में उठाया और पुराने मकान में पहुँची ।चौके में शशि चटाई पर लेटा था ।वह उसे पहचान न सकी । उसका मुख पीला पड़ गया था । -बहन की हड्डी -हड्डी चमक आई थी । वह रोते-रोते विह्वल हो गई । निरुपमा रसोईघर में थी । रोना सुनकर

बाहर आई । उमा को देखकर उसका क्रोध उमड़ पड़ा ।चीखकर बोली, “तुम यहाँ क्यों आई ?” उमा ने अपनी जेठानी की ओर तीव्र दृष्टि से देखा और बोली ,”तुम्हारे अंतर में जो आग जली है ,उसी की भूख बुझाने आई हूँ ,राक्षसी !”

 और उसने अशोक को उठाकर उसके चरणों में डाल दिया ।आर्द्र स्वर में बोली , “जीजी !इसे खाकर अपनी आग शांत कर लो, और मेरे शशि को मुझे दे दो ।“. निरुपमा उसके क्षण बुत-सी बनकर खड़ी रही पर उमा ने उनकी ओर देखा भी नहीं ।उसने शशि को गोदी में उठाया और चल पडी ।।

समाप्त

पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ें व समझें तथा अपनी कॉपी में लिखें।